अध्याय- द्वितीय

सम्बन्धित साहित्यों का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्यों के आधार पर ही नवीन शोध कार्य तथा अनुसंधान की पृष्टभूमि तैयार होती है। इसी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान अध्ययन का महत्व, आवश्यकता एवं उपयोगिता क्या है तथा यह भी बताया जा सकता है कि किये जाने वाले नवीन अध्ययन अपने विषय-क्षेत्र के पूर्ववर्ती अध्ययनों से किस प्रकार भिन्न है तथा किस प्रकार ज्ञान को पूर्व अध्ययनों सें आगे बढ़ाने में सहायक हैं। यह पुनरावलोकन का कार्य हमें पूर्ववर्ती अध्ययनों की पुनरावृत्ति करने तथा समय एवं साधन के अपव्यय से बचाता है।

Good ,Bar and Scates (1941) के अनुसार "जिस प्रकार एक दक्ष चिकित्सक के लिए जानना आवश्यक हो जाता है कि औषधी के क्षेत्र में कौन-कौन से नये आविष्कार हो रहे है, उसी प्रकार शिक्षा के विद्यार्थियों तथा शोध कार्यकर्ताओं के लिए भी यह आवश्यक हो जाता है कि वे शैक्षिक सूचनाओं के स्रोत की उपलब्धि तथा उपयोग से परिचित हो।"

अत: वर्तमान अध्ययन के लिए चुने गये प्रमुख कारक मानसिक तनाव से सम्बन्धित अध्ययनों की एक पुनरावलोकन रुपरेखा तैयार की गयी है।

2.1 मानसिक तनाव सम्बन्धी अध्ययन :-

रानी (1980) आलपोर्ट और हार्पर का संशोधित 'एचीवमेंट एन्जाइटी टेस्ट' प्रयोग किया गया । इस अध्ययन में उनहोने पाया कि अनूसूचित जाति तथा गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धि तथा जीवन के उद्देश्यों के प्रति प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं था। गैर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक दुश्चिन्ता और जीवन के उद्देश्यों के प्रति प्रत्यक्षीकरण में सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया।

कुरैशी (1991) ने औधोगिक शहर महाविद्यालयों में अध्यनरत आकांक्षी छात्राओं की परिस्थितिगत एवं विशेषज्ञ दुश्चिन्ता का अध्ययन किया । उन्होनें फिरोजाबाद नगर के तीन बालिका विद्यालयों में नगरीय परिवेश से जुड़ी 17 से 20 आयु वर्ग की 200 लड़कियों को प्रतिदर्श के रुप में

चयनित किया । आकांक्षा स्तर अनुसूची के आधार पर आकांक्षी बालिकाओं के दो समूह बनाये गये। तत्पश्चात् स्पेलवर्गर द्वारा निर्मित स्टेट-ट्रेट एन्जाइटी इन्वेट्री का प्रयोग उच्च एवं निम्न आकांक्षा स्तर वाली बालिकाओं के दो समूह पर किया गया। अध्ययन में पाया गया कि निम्न आकाक्षीं बालिकाओं की अपेक्षा परिस्थितिजन्य एवं सम्पूर्ण दुश्चिन्ता अधिक होती है।

यागनिक एवं गन्थी (1999) ने अपने अध्ययन में शहरी और ग्रामीण बच्चों के बीच शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं उसके प्रभाव का अध्ययन किया । अध्ययन में सिन्हा एवं गुप्ता (1971) द्वारा निर्मित शैक्षिक दुश्चिन्ता मापनी एवं सिन्हा (1974) द्वारा निर्मित 'चिन्ता मापनी' का प्रयोग करते हुए पाया कि नगरीय क्षेत्र के सरकारी तथा निजी विद्यालयों के बालक समूह को छोड़कर शेष विद्यालय के बालक समूहों में सार्थक अन्तर था।

पाण्डेय (2000) द्वारा स्वनिर्मित शैक्षिक दुश्चिन्ता मापनी द्वारा पूर्व किशोरावस्था की बालिकाओं पर अध्ययन किया गया। जिसमें दुश्चिन्ता की दृष्टी से भिन्न-भिन्न बालिकाओं का शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना की गई। अध्ययन में पाया गया कि उच्च शैक्षिक दुश्चिन्ता स्तर की बालिकाओं की अपेक्षा निम्न शैक्षिक दुश्चिन्ता वाली बालिकाओं की सम्प्राप्ति विज्ञान में ठीक थी। ठीक उसी तरह से उच्च शैक्षिक दुश्चिन्ता वाली बालिकाओं की अपेक्षा मध्यम शैक्षिक दुश्चिन्ता वाली बालिकाओं की अपेक्षा भी विज्ञान में सम्प्राप्ति अधिक पायी गई। उच्च शैक्षिक दुश्चिन्ता वाली बालिकाओं की हिन्दी में भी सम्प्राप्ति अधिक थी। अशिक्षित तथा शिक्षित माताओं की बालिकाओं में विज्ञान की उपलब्धि एवं शैक्षिक दुश्चिन्ता के मध्य नकारात्मक समर्थन पाया गया।

कंचन एवं कलप्पन (2000) ने 'इफेक्ट आफ बिहेवियर माडीफिकेशन टेक्निक्स एवं रिड्यूसिंग टेस्ट एन्जायटी एण्ड इम्प्रूविंग स्टडी स्किल्स आन एकेडमिक आफ हाई स्कूल गर्ल्स' नामक अध्ययन किया। इस अध्ययन में सरसन (1960) द्वारा निर्मित परीक्षण दुश्चिन्ता मापनी का प्रयोग चेन्नई के कॉरपोरेशन गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल के 14 से 17 आयु वर्ग के बच्चों पर किया । अध्ययन में तीन प्रयोगत्मक समूहों के अलग-अलग जैकोब्सन रिलेक्सेशन थैरेपी , सिस्टमेटिक डेसेन्सिटेशन और महर्षि महेश योगी के ट्रान्सेन्डेन्टल मेडिटेशन द्वारा पढ़ाया गया । चौथे नियंत्रित समूह को कोई उपचार नहीं दिया गया। अध्ययन में पाया गया कि तीनों प्रयोगात्मक समूह सार्थक रुप से परीक्षण दुश्चिन्ता को कम करते है। परीक्षण दुश्चिन्ता में कमी और अध्ययन कौशल में सुधार शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाते है, लेकिन नियंत्रित समूह में कोई सुधार नहीं दिखाई दिया।

श्रीवास्तव (2001) ने 'संस्थागत एवं दूरवर्ती माध्यमों सें अध्ययनरत बी.एड के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिन्ता, मूल्य और उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन' किया । इन्होने संस्थागत रुप से प्रशिक्षण 900 छात्राध्यापकों तथा दूरवर्ती माध्यम के 300 छात्राध्यापकों को चयनित कर पाण्डेय (2001) द्वारा निर्मित छात्राध्यापक शैक्षिक दुश्चिन्ता मापनी तथा शेरी एवं वर्मा (1972) द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया। प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट है कि दूरवर्ती माध्यमों से अध्ययनरत विद्यार्थियों की तुलना में संस्थागत माध्यमों से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक दुश्चिन्ता अधिक होती है। संस्थागत छात्राओं की अपेक्षा संस्थागत छात्रों में शैक्षिक दुश्चिन्ता अधिक पायी गयी, जबकि संस्थागत छात्राओं में दूरवर्ती माध्यमों से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक दुश्चिन्ता अधिक पायी गयी । यह भी पाया गया कि शैक्षिणिक दुश्चिन्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धित में नकारात्मक सार्थक सम्बन्ध था।

तिवारी (2002) ने 'ए स्टडी आफ एकेडमिक एन्जाइटी एमंग स्टूडेंट टीचर्स' नामक अध्ययन किया। इन्होने वाराणसी जनपद के महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 203 छात्राध्यपकों को चयनित कर पाण्डेय (2001) द्वारा निर्मित छात्राध्यापक शैक्षिक दुश्चिन्ता मापनी का प्रयोग किया । विश्लेषणोपरान्त अध्ययन में पाया गया कि सामान्य, अन्य पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्राध्यापकों को शैक्षिक दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं था। यह भी पाया गया कि पुरुष और महिला छात्राध्यापकों की शैक्षिक दुश्चिन्ता एक-दूसरे से भिन्न नहीं होती है। विज्ञान और कला वर्ग के छात्राध्यापकों की शैक्षिक दुश्चिन्ता भी एक-दूसरे से भिन्न नहीं थी।

पाण्डेय (2004) ने 'जनजातीय विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति, शैक्षिणिक चिन्ता व परिस्थतिकीय वंचन का सृजनात्मक का सम्बन्ध' नामक अध्ययन में पाया कि जनजातीय विद्यार्थियों की विस्तरण योग्ता व सम्रग सृजनात्मक तथा शैक्षणिक चिन्ता के मध्य सह-सम्बन्ध सार्थक था। निष्कर्षत: यह ज्ञात हुआ कि जनजातीय विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता का विस्तारण योग्यता में सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं होता जबकि उनकी शैक्षणिक चिन्ता का विस्तारण योग्यता में सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं होता जबकि उनकी शैक्षणिक चिन्ता, मौलिकता, योग्यता व समग्र सृजनात्मकता से ऋणात्मक रुप से सम्बन्धित होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय विद्यार्थियों में व्याप्त शैक्षणिक चिन्ता उनकी सृजनात्मकता में विकास अवरुद्ध करती है।

पालिवाल रेखा एवं सन्ध्या (2008) ने शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों पर जीवन तनाव का अध्ययन किया इनका प्रमुख उदेश्य लिंग का प्रभाव तथा रहन-सहन पर जीवन तनाव को देखना था और छात्र/छात्राओं का प्रतिचयन के रुप में यादृच्छिक विधि से 120 ग्रामीण तथा शहरी छात्रों को लिया गया प्रस्तुत अध्ययन के उपरान्त परिणाम प्राप्त हुए जिसमें शहरी विद्यार्थियों में निम्न स्तर का तनाव पाया गया ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा तथा छात्राएं छात्रों की अपेक्षा अधिक तनावग्रस्त पायी गयी।

रजनी एवं गारटिया (2012) ने उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों पर किए गए शैक्षिक तनाव और शैक्षिक उपलब्धि से संबधित अध्ययन में पाया कि जिन छात्रों में तनाव का स्तर कम था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च और जिनमें शैक्षिक तनाव अधिक था उनकी शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न था।

2.2 मानसिक तनाव सम्बन्धित निष्कर्ष :-

उपर्युक्त शोधों के पुनरावलोकन के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1.बालिकाओं मे घबराहट व चिन्ता के कारण अत्यअधिक असुरक्षा की भावना होती है तथा बालिकाओं में बालकों के प्रति भय व भाव अधिक होता है। (नन्दा 1957)

2.चिन्ता पर आयु-लिंग- भेद व सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति का कोई प्रभाव नहीं होता। (जुल्का 1963, क्रिश्चयन, 1977 सिहं, 1980)

3.अनुसूचित जाति तथा गैर अनुसूचित के विद्यार्थियों के शैक्षिक दुश्चिन्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धि तथा जीवन के उदेश्यों के प्रति प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक सह-सम्बन्ध नहीं था। (रानी, 1980)

4. परीक्षण दुश्चिन्ता मे कमी और अधय्यन कौशल में सुधार से शौक्षिक उपलब्धि बढ़ती है। (कंचन तथा कलप्पन, 2002)

5. छात्राएं, छात्रों की अपेक्षा अधिक तनावग्रस्त पायी गई । (पालीवाल, 2008)